

प्रिय भाइयों,

यह पुत्रत्व का संदेश प्राप्त करने वालों को एक जिवन परिवर्तन के अनुभव ले आएगा । यह परमेश्वर का वचन है , आज की कलीसिया के लिए, संतो को उनके निर्धारित मिरास मे ले आएगा । बहुत लोगों ने सोचा कि परिपक्वता का मार्ग कठिन कार्य करने से ही प्राप्त होता है और अन्य लोगों ने सोचा कि यह सम्भव ही नहीं है मसीह का महीमा मे आने से पहले । अन्य लोग अभी भी यही सिखाते हैं कि पुत्रत्व एक अनुभव केवल प्रेरितिय पिता के साथ होता है । मै भरोसा करता हूँ कि निम्न पुत्रत्व की सिधान्त के आकृतियाँ आप को वचनों को खोजने मे बाध्य करेगी और पिता को ढूढने के लिए , सम्पूर्ण लेपालकपन आप पर प्रगट हों । दिया गया पर्ची प्रतिलिपि करने के लिए उपलब्ध है ।

आशिषे पावल गल्लिगन

## जागृति संदेश

Revival Ministries Australia की ओर से

P.O. Box 2718 BC TOOWOOMBA Q4350 Australia

Phone: 61-7-46130633; e-mail: [rma@revivalministries.org.au](mailto:rma@revivalministries.org.au)

Website: [www.revivalministries.org.au](http://www.revivalministries.org.au)

\*\*\*\*\* अगस्त 2007 \*\*\*\*\* अगस्त 2007 \*\*\*\*\* अगस्त 2007 \*\*\*\*\*

### पुत्रत्व का सिधान्त के कुछ आकृतियाँ

#### वचन ही केवल

यह एक गम्भीर कथन है जो सुधार के बाद आया, मूल भाषा लॅटिन (Latin) लिखित, कहती है **वचन ही केवल** । कथन को विस्तृत किया जाए तो होगा : **केवल वचन ही हमारा अधिकार हैं विश्वास और अभ्यास करने के लिए** । इसलिए जो कुछ भी हम सिखाते हैं, वह वचन के संदर्भ में होनी चाहिए, जैसा लिखा है - 2 **तिमोथि 3:16** गवाही देती है हरेक वचन दीव्य प्रेरणा है और हम से कहती है कि वचन **उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है**। यदि हम वचन के अनुसार सिखाएं और प्रचार करें तो जो हमें सुनते हैं , जाचेंगे, उन तक वचन पहुँचा है ; लेकिन यदि हम अधिकार के साथ बाटेंगे हमारे स्वप्न, दर्शनों, भविष्यवाणी की वचनों और हमरी ही विकसित अवधरणयुक्त समझ को, तो हरेक हमारे शिक्षा के सत्यशीलता और विश्वासयोग्यता को नहीं जाँच पाएंगे । यदि हम में प्रबल अभिषेक हैं जो अवगत करने की योग्यता हैं, वह यह नही प्रमाण या पुष्टि कर सकता कि हमारा वचन वचनरूपि खरा है ।

#### पुत्रत्व की वास्तविकता

#### यीशु ने प्रेरितों के लिए प्रार्थना की

यीशु ने जो प्रार्थना की **यूहन्ना 17** में, पास्टरो में शांति गति-विधियों के लिए एक उदाहरण स्वरूप नगरों के प्रयोग किया जाता है, तौभी 4 - 18 **आयतों** में, यीशु स्पष्ट रूपे से कहता है प्रेरितों की बड़ौती और प्रशिक्षण के विषय में

उस स्थान तक जहाँ यीशु मे **अपना कार्य समाप्त** किया और अब उन्हें प्रेरितों को संसार में भेजने के लिए तैयार हैं । तब उसके बाद की आयतें विश्वासियों की एकताई के विषय में कहती हैं जो अंतिम अभिप्राय लाती हैं, प्रेरित लोंग ही हैं जो जाएंगे, जिन्हें प्रभु ने प्रशिक्षण दी, शिष्य बनाकर और कलिसिया को बढ़ाते हुए, एकत्व लायेंगे जिसके लिए प्रभु ने प्रार्थना भी की थी । इसलिए यह आवश्यक है कि प्रेरित लोंग प्रेरितों सभा में आएँ चाहे वह अनियमित जुट क्यों ना हो, जैसे पौलुस की हुई थी अगुवे प्रेरितों के साथ, यरूशलेम में, जो वह **गलतियों 2:1-10** वर्णन करता है, अथवा विशाल महा-सम्मेलन हो **प्रेरित 15** की जिसमें सब प्रेरित लोंग और प्राचिन लोंग कलीसियायों की महान समस्या सुलझाने के लिए हुई थी ।

### **बहुत से पुत्रों को महीमा**

हमारे दिनों में महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह (येशुआ मेसायाह) अद्भुत कार्य कर रहा हैं । **इब्रानियों 2:10** हम से कहती है **क्योंकि जिस के लिए सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा जब वह बहुत से पुत्रों को महीमा में पहुंचाए , तो उन के उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे ।** यीशु मसीह सिद्ध हो चुका है **“सिद्ध बनकर....” इब्रानियों 5:9** । अब परमेश्वर उसके महान लक्ष्य को पूरे करने को है - **“बहुत से पुत्रों को महीमा ”** ।

### **मिरास की आयु**

कब परमेश्वर पुत्रों को महीमा में ले आएगा ? यह तब होगा जब यीशु वापस आएगा और हम अपनी खास मिरास प्राप्त करेंगे ? **रोमियों 8:23 (ख)**, नहीं ! देह का छुटकारा ही अंतिम प्राप्ति हैं पुत्रों को मिरास वायदा किया गया हैं । पुत्रत्व, साधरण शब्दों में, परिपक्वता मे चलने को दर्शाता है । हमारी चाल नयाँ जन्म में शुरू होती हैं (**यूहन्ना 1:12-13 और 3: 3-6**) परन्तु हम शिशु की नाई चलते है, बच्चा बनकर जवानी में प्रवेश करते हैं (**1 यूहन्ना 2: 12-14**) । परन्तु आशा की गई लक्ष्य होती है कि परिपक्वता की आयु तक पहुंचे, लेपालकपन पुत्रत्व के स्थान पहुंचने तक । मिरास की एक आयु है जब **जो भाग मेरा हो (लूका 15:12)** जो **आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है (1 पतरस 1:4-5)**, हमें दी जाएगी, हम में प्रगट की गई है ! यह एक प्रकटनहारा प्रकाश है, यह एक महीमा में सिद्ध होने तक की यात्रा है !

### **आत्मा का प्रार्थमिक कार्याएं**

नयाँ जन्म होते ही हम वारिस बन जाते हैं लेकिन **कि वारिस जब तक बालक है, यद्धपि सब अस्तुओं का स्वामी है, तौभी उस में और दास में कुछ भेद नहीं परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में रहता है (गलतियों 4:1-2)** । ताकि व्यवस्था के अधिनों को मोल लेकर छोड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिलें (**पद 5**) । क्योंकि हम वारिस हैं (**पद 7**), पहले ही से हम लेपालक हैं । जब हम ने पहली बार परमेश्वर का आत्मा पाया तो नए सिरे से जन्म हुआ और वचन के अनुसार , हम तुरन्त आत्मा से भरने लगते हैं, जैसे **प्रेरित 8:14-17** जैसे और **प्रेरित 19:6** । आत्मा की भरपूरी जो पतरस ने वायदा की थी जिन्होंने वचन को सहर्ष स्वीकार किया और बपतिस्मा लिया है (**प्रेरित 2:38, 41**) और वही वरदान पतरस ने **प्रेरित 10:45** में खतनाधारि विश्वासीयों में पहचान पाया । परन्तु न तो नयाँ जन्म (आत्मा का कार्य) पाने वाले और न तो पवित्र आत्मा की वरदान पाने (आत्मा का दूसरा कार्य) लेपालक पुत्रों के बराबरी कर सकता है ।

## पुत्रत्व में आना पिता / पुत्र के रिश्ता बराबरी नहीं कर सकता

पुत्रों के नाई गोद लेने का अगला कार्य है (आत्मा का तिसरा कार्य ) और आत्मा का कार्य विश्वासियों के जिवन में प्रकट होना । यह आत्मा के द्वारा गोद लेना है जो विश्वासियों को मिरास में ले चलता है , परिपक्वता में चलने के लिए , लक्ष्य लेते हुए - परमेश्वर की महीमा में चलकर कि मसीह हम में प्रगट हो (**कुलुस्सियों 1:27 और यूहन्ना 14:21-23**) । आत्मिक भाषा के शब्दों में पुत्रत्व में आने का अर्थ, प्रेरितीय पिता के सम्बन्ध में आना नहीं है और न तो साधरण प्रेरित हैं जो वचन की सेवाकाई पहुँचाते हैं और पुत्रत्व के विषय में जानकारी देते हैं । तथापि हर कोई जो नये सिरे से जन्मा हैं, दूसरों को सेवाकाई दे सकते हैं और उन्हें नयाँ जन्म का अनुभव में ला सकते हैं, और हर कोई जो आत्मा से भरपूर है, दूसरों को आत्मा की भरपूरी की अनुभव में ले जा सकता है, इसलिए एक विश्वासी जो पुत्रत्व का अनुभव किया है वही दूसरों को पुत्रत्व के विषय में सेवाकाई दे सकता है क्योंकि यह एक आत्मा का क्रिया और प्रस्तुती है।

## प्रेरित लोग पिताएं हैं

कु छ वर्षों में परमेश्वर ने प्रेरित लोगों को पुनःस्थापित किया है और प्रेरित लोग मसीह की देह की पिताएं हैं, पुनःस्थापना में, प्रेरित लोग कई बार सेवाकाई के नायकों और अगुवों के लिए पिता होते हैं (अगुवों का अर्थ वचन के अनुसार स्थानीय कलीसिया की पास्टर हैं )। तौभी कई एक प्रेरित लोगों मे यह गलत पद्धति दिखाई देती है कि प्रेरितीय पिता ही अपने आप को गौरवशाली स्थान में रखते हैं , सब के सब उन के साथ पुत्रत्व के सम्बन्ध में आने की आवश्यकता समझते हैं । पुत्रत्व की शिक्षा वे प्रेरित लोग ऐसे देते हैं कि पुत्रत्व में प्रवेश तब करते हैं जब एक प्रेरितीय पिता मिल जाते हैं और पुत्रत्व का प्रकाश जुड़ जाते हैं और प्रेरित के साथ पिता और पुत्र का रिश्ता में स्थापित हो जाता है। ऐसे शिक्षा के लिए ऐसी कोई वचन नहीं पाया जाता । हाँ, पौलुस स्पष्टता से कहता है कि तिमोथी उसका **प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है (1 कुरिन्थियों 4:17 )**, और पौलुस तितस को **सच्चा पुत्र (तितस 1:4)** कहता है, और पौलुस उनेमियुस के विषय में कहता है, **अपने बच्चे उनेमियुस के लिए जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है (फिलेमोन 10)** । पौलुस खुलासा करता है कि वह कुरिन्थियों की कलीसिया के लिए पिता है, उन्हें सुसमाचार के द्वारा **जन्माया** है (1 कुरिन्थियों 4:15) और गलतियों को कहता है **हे मेरे बालकों (गलतियों 4:19)** । फिर भी वह अपने सभी पत्रियों में ऐसा रिश्तायुक्त भाषा कभी प्रयोग नहीं करता जब गोद लेने के द्वारा पुत्रत्व का सिधान्त जब सिखा रहा हो, जो सारे विश्वासियों के लिए था, चाहे वे पौलुस के पुत्र हो या नहीं । उदाहरण के लिए , पौलुस रोमियों को लिखते वक्त उनके पिता के रूप में नहीं परन्तु वह पुत्रत्व के विषय में **रोमियों 8:14-17** में सिखाता है । फिर इफिसियों में पौलुस हमसे कहता है कि हम **यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों (पुत्रत्व ) 1:5**, परन्तु पुस्तक में कहीं पर वह अपने आपको पिता अथवा वह इफिसियों में संतो को उसके बच्चे सम्बोधन नहीं करता । पौलुस को ज्ञान था कि सारे संत परमेश्वर के संतान होने के लिए बुलाए गए - ना कि प्रेरित के संतान ।

मैं परमेश्वर का अनुग्रह से और उसके बुलाहट और दान के कारण प्रेरितीय पिता होने के लिए बुलाया गया । मेरे बहुत सारे आत्मिक बच्चे हैं ; सेवाकाई में पुत्रों को बढ़ाता हूँ ; मैंने पुत्रों को तैयार किया जो आज वे पिता बन गए हैं । प्रेरितीय दल शिलोह में हम ऐसे ही प्रेरितीय रिश्तों की लुप्त उठाते हैं । परन्तु इस चीज़ की चाबी यह है कि हमने

यीशु मसीह के द्वारा उसके आत्मा से लेपालकपन (पुत्रत्व) की आत्मा पाई है, और हम **यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा (गलतियों 3:26)** परमेश्वर की सन्तान बन गए ।

### हमें परिपक्वता में चलने के लिए बुलाया गया

कोई ऐसे प्रेरित नहीं जिन्हें मसीह ने इन अंतिम दिनों में खड़ा किया है जो सिद्ध हो और न तो परमेश्वर की अनन्त योजना का पूरा प्रकाश (अथवा रहस्य वा गुप्त हुआ ज्ञान) हो । यहाँ तक कि पौलुस भी इस बात का इंकार करता है **फिलिप्पियों 3:12** में । साथ ही साथ पौलुस कलीसिया को परिपक्वता में चलने के लिए निमंत्रण देता है, **हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं , जिसे परमेश्वर परमेश्वर ने सनातन से हमारी महीमा के लिए ठहराया । यह है , जो सब के सब सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था (इफिसियों 3:9) ।** पौलुस हमें बताता है **फिलिप्पियों 3:15-16** में **सो हम में जितने सिद्ध है, यही विचार** (वर्तमान भाषा में विचार यह विचार है प्रकाश को समझने के लिए धनात्मक बुद्धि-स्थिति ) **रखें**। यदि हम इस चल को परिपक्वता में चलाए और उसी व्यवस्था में चलें और पौलुस कहता है कि **और किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा** । यह एक वायदा है : परमेश्वर हमारे लिए कर देगा कि हमें एक ही विचार के होकर साथ चलने के लिए योग्य बनाएगा ।

### यह अनुग्रह का चाल है

यीशु मसीह में मरास का अनुग्रह का स्रोत एक अद्भुत छवि और खास साधक हममें । पौलुस कहता है यह अनुग्रह हममें समय शुरू होने से पहले उपलब्ध है (2 **तिमुथियुस 1: 9**) और फिर वह कहता है **रोमियों 1: 5** में कि **जिस के द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरीताई मिली, कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उस की माने** । यह परमेश्वर का ही अनुग्रह है मसीह में सेंट-मेंत में दिया गया जो हमें परिपक्वता में चलने में अगुवाई करती है । यह अनुग्रह प्रेरोतों द्वारा पहुँचती है जिनको मसीह ने अन्त के समयों में खड़ा किया कि कलीसिया को परिपक्वता में ले आए **इफिसियों 4:13 (ख)** । **इफिसियों 1:5-6** में पौलुस कहता है कि पहले से ही ठहराया गया लेपालक पुत्रत्व है **उस अनुग्रह की महीमा की स्तुति हों** । केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही से हम परिपक्वता में चल सकते हैं । हमें लेपालकपन पुत्रों में बदलने का कार्य आत्मा का है जो हमें असिमीत अनुग्रह में योग्य बनाता है ।

### महान आत्मिक आशीषें

**आत्मिक आशीषों** में से एक आशीष है कि **हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी जो हैं अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों (इफिसियों 1: 3, 5) । परमेश्वर हमें चुना जगत की उत्पत्ति से पहले उस में चुन लिया (आयत 4), इस मनसा से भाइयों, मसीह ने अपने लिए हमें पहले से ही लेपालक पुत्रों की नाई हमें चुन लिया था । यह महीमा में सिद्धता की ओर प्रवेश करने की शुरुआत है । यह वायदायुक्त मिरास प्राप्त करने की आत्मा का कार्य है । इफिसियों की यह अंश अत्यन्त खुलासा करता कि परमेश्वर हमें मसीह यीशु में पुत्रों की नाई स्वीकार करता है । यह गोद लेने के द्वारा लेकिन साधरण समझ में **गोद लेना** शब्द बाईबल के अनुसार नहीं है । बाईबलीय अर्थ होती है **पुत्र का स्थान पर** । फिर वही परमेश्वर है जो हमें पुत्रों की नाई स्वीकार करता है । यह **रोमियो 8:15** में सिद्ध होती है जो कहती है हम ने**

**लेपालकपन की आत्मा मिली है** , NIV (न्यू स्टैंडर्ड वर्शन ) वास्तव में कहती है **पुत्रत्व की आत्मा** । परमेश्वर की इच्छा है कि पिता के अनेक पुत्र हों और वह यीशु मसीह के द्वारा सम्भव करता है ।

### **पुत्रत्व में प्रवेश करना आत्मा का अनुग्रह का कार्य है**

पुत्रत्व प्राप्त करने के लिए हम परिश्रम नहीं कर सकते, न तो हम शुरु की उद्धार प्राप्त करने के लिए परिश्रम कर सकते हैं (**इफिसियों 2:8**) । सबकुछ हम ने जो परमेश्वर से पाई है विश्वास के द्वारा ; अपने ओर से नहीं ; यह परमेश्वर का दान है । यह कर्मों के द्वारा नहीं, नहीं तो हम घमण्ड करते । यही समय है परमेश्वर की कलीसिया के लिए उसके बुलाहट सुनने के लिए कि पिता के घर में गृह प्रवेश करें । अंत में केवल एक ही घर है (कलीसिया) और यह पिता का घर है । परमेश्वर ने इन अंतिम दिनों में प्रेरितों को खड़ा किया है कि इसकी कलीसिया को घर ले आए। आत्मा का कार्य इन अंतिम दिनों में है कि बच्चों को परमेश्वर के पास लाए , सेवकों को पिता के साथ पुत्र का गहन रिश्ता में परमेश्वर के पास लाए । ऐसा रिश्ता प्रत्येक संत और सेवकों को एक अद्भुत सुरक्षा, साहस, अनुशासन और पहचान में ले आएगी पुत्रत्व की आत्मा के जरिए अथवा जैसा पौलुस कहता है **गलतियों 4:6** में **अपने पुत्र की आत्मा दी** ।

### **एक मनसा ही लक्ष्य है**

जैसे हम घर आते हैं और अपना स्थान परमेश्वर की वासस्थान में पाते हैं , तब हम और विश्वासियों के साथ एक हो जाते हैं क्योंकि हम परिपक्वता में आ गए हैं ; हम **सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान** में आ गए हैं ; **एक सिद्ध मनुष्य बन गए और मसीह की पूरे डील-डौल तक बढ़ गए है** (**इफिसियों 4:13**)। एक मन के तभी हो सकते हैं जब प्रेरित लोग मसीह के द्वारा पिता होने के लिए बुलाए जाते हैं और कलीसिया को एक मन के होने के लिए बुलाए जाते हैं , वही व्यवस्था पालन करते हुए और संतो के लिए पालन करने के लिए उदाहरण बनते हुए (**फिलिप्पियों 3:16-17**)।

**पावल गल्लिगन**